ISSN 2249-5169 ₹ 25

वर्ष 8 अंक 6 मार्च 2012

समाज-धर्म

सामाजिक जागृति को समर्पित मासिक समाचार पत्रिका

बंधन तोड़ आसमान को छूती शिक्षित नारी

नारी विशेषांक

'नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज़ शुद्ध व सही भावना से करती है, तब वह पहाड़ों को भी हिला देती है। मैंने स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मानकर उसकी पूजा की है।'

आदर्श के अभाव में उसका जीवन अनियंत्रित होकर बिना पतवार के नाव के समान संसार सागर में डोलता रहता है। उसके हृदय में सदैव अभाव और तृष्णा बनी रहती है। वह न तो पारिवारिक जीवन सुखी बना पाती है, न आध्यात्मिक जीवन ही। इस आदर्श के अभाव में जीवन मरुस्थल बन जाता है, जिसमें मृग-मरीचिका के सिवाय सरस द्रव के दर्शन कभी नहीं होते।

जीवन में समरसता लाने के लिए आदर्श का होना और पालन करना आवश्यक है। भौतिक उन्नति के पीछे अबाध गति से दौड़ने वाले पाश्चात्य देश विश्व को विनाश के तट तक घसीट ले गए हैं। यदि आध्यात्मिक तत्त्वों का उनमें [illegible] होता तो आज स्थिति भिन्न होती। भारतीय समाज आध्यात्मवादी समाज रहा है। अतः चरम उन्नति में विश्व-कल्याण की भावना रहती है। स्त्रियों को इस आदर्श आध्यात्मिक उन्नति में सहायता मिलती है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
जग के सुन्दर आँगन में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहाँ के नारी वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र स्त्री को केवल भोजन पकाने एवं बच्चे पैदा करने का साधन समझते हैं, वे दुर्भाग्य से अभी सभ्यता संस्कृति या शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे हैं।

प्राचीन युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में समान रूप से भाग लेने की अधिकारिणी थी। आधुनिक काल में नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारतीय संविधान ने भी नर-नारी को समान अधिकार दिया। आज 21वीं सदी में नारी, पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर समाज के निर्माण में जुटी हुई है। संघर्षों में शक्ति-रूपा बनकर पुरुष को सहयोग दे रही है और उसकी प्रेरक शक्ति बनी हुई है।

मनु ने कहा है कि जहाँ स्त्रियों का आदर होता है वहाँ देवता बसते हैं।

- ऐसोसियेट प्रोफेसर
डी.२०८, शान्तम अपार्टमेंट
[illegible]